International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(I), October - December, 2021, pp.116-118

एकांगी नैतिकता और भारतीय नारी

डॉ. अरविंद अंबादास घोडके*

प्रस्तावना

नैतिकता के मापदंड पुरुष और महिला के लिए एक समान होने चाहिए। एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान नैतिकता नारी जीवन के लिए यातना और पीडा कारण बनी हुई हैं। समाज में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने की कोशिश समाज समय–समय पर करता आया हुआ है। आहार, निद्रा और मैथुन किसी भी पशु–प्राणी की जरूरत होती है। भारतीय समाज व्यवस्था में सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए काम भावना को विवाह संस्कार में बांधकर उसका नियमन किया गया है। काम भावना को विवाह संस्कार में बांधकर उसका समाज मान्य नियमन करते समय उदात्त परिवार का आविर्भाव हुवा। भारतीय समाज व्यवस्था में परिवार एवं कुटुंब व्यवस्था का बड़ा महत्व है। किंतु इस परिवार एवं कुटुंब व्यवस्था में पुरुष वर्चस्व का बोलबाला दिखाई देता है। नैतिकता के बंधनों में स्त्री को बांधने की कोशिश की जाती है, काम भावना को नैतिकता के तराजू में तोल कर उसका नियमन करने की कोशिश विवाह के माध्यम से करने वाला भारतीय पुरुषी समाज अपने हित के अनुरूप स्त्री विरोधी पुरुष वर्चस्व वादी व्यवस्था का निर्माण करता हैं। सदियों से लेकर आज भी स्त्री के काम भावना को अनेक बंधनों में बांधकर उसे नैतिक–अनैतिक प्रतिमानो में अपनाकर नारी का ही शोषण किया गया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में काम भावना को लेकर पुरुषों से कहीं अधिक नैतिकता के बंधनों में स्त्री को बांधने की कोशिश की जाती है। नैतिकता और प्रतिष्ठा के डर से अतृप्त काम भावना की पीड़ा में भारतीय नारी की सदियों से पीडा, वेदना का जिंदगी जीने के लिए मजबूर होती हुई दिखाई देती है। मैत्रीयी पुष्पा कहती है, "स्त्री को शरीर के आधार पर ही घेरा जाता है और यदि वह कुछ कहे बोले तो अश्लील और मर्यादा का लांछन तैयार है। सारा कुछ पुरुष सत्ता का किया धरा है किसी विदुषी नारी से पूछ कर शास्त्र न ही रचे गए, ना नैतिकता के मानदंड बने।"[1] भारतीय समाज आधुनिक होने का दिखावा कर रहा है, किंतु नैतिक– अनैतिक जैसी नारी विरोधी विचारधारा नारी शोषण के लिए आज भी प्रचलित दिखाई देती है। आज भी भारतीय समाज में पुरुष के प्रति अलग न्याय और स्त्री के प्रति अलग न्याय की वृत्ति दिखाई देती है। भारतीय समाज व्यवस्था में किसी भी अन्यायी कृति के लिए सजा का प्रावधान होता ही है। किंतु पति द्वारा पत्नी पर अन्याय किए जाने के बाद भी पति परमेश्वर की कल्पना में नारी अन्याय सहने के लिए मजबूर है।

नैतिकता के बंधन नारी पर ही क्यो? यह समाज नारी पर कैसा अन्याय करता आया है, उसे 'स्त्री मुक्ति सांझा चूल्हा' में अनामिका लिखती है कि, ''मारपीट, गाली–गलौज , भ्रुण हत्या, कौटुंबिकव्यभिचार, बलात्कार और तरह–तरह के यौन दोहन, सती, पर्दा , डायन दहन, वेश्यावृत्ति, यांत्रिक संभोग, प्रेम, विवाह बंधन, अनचाहा गर्भपात, सक्षम और सुरक्षित प्रसव केंद्र का अभाव दुनिया के जितने स्त्री विषयक अपराध है प्रायः सब के मुख्य पेटी (प्राइम साइट) स्त्री शरीर ही होता है। शरीर जो कि इतना नरम और कोमल है। फिर भी इतना कर्मठ, लचीला और फुर्तीला शरीर जिसने आप को धारण किया है। आपको पाला पोसा है। कहानियां लोरिया सुनाई है।

---

6 हिंदी विभाग, सहायक प्राध्यापक, यशवंतराव चव्हाण कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविदयाल, अंबाजोगाई, जि.बीड, महाराष्ट्र।

दिन रात आप की खिदमत में जुटा है। आखिर आपसे चाहता क्या है?''[2] एक जीव की अपेक्षा दूसरा जीव उसके साथ एक समान व्यवहार करें। किंतु पुरुष जीव नारी जीव पर अन्याय करता हुआ दिखाई देता है। खोकली और नकली आधुनिकता मैं आज की नारी नैतिक बंधनों का सर्वाधिक शिकार होती हुई दिखाई देती है।

मनिका जी द्वारा लिखित 'कोई सजा नहीं कहानी भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री पुरुष के प्रति स्वीकृत एकांगी और अन्यायी नैतिकता का यथार्थ चित्रण करती है। कहानी की नायिका मीरा अपने पति का, परिवार और समाज के डर से चुपचाप शारीरिक और मानसिक शोषण भरा जीवन जी रही है। आज के आधुनिक युग में भी पुरुष मानसिकता वाले पति, पत्नी को मारना, पीटना, गाली गलौज करना अपना अधिकार समझते हैं। औरत सिर्फ गुलाम होती है।स्त्री एक उपयोग की वस्तु है, जिसका मन चाहे शोषण भारतीय समाज व्यवस्था में होता हुआ दिखाई देता है। उसका शोषण करते हुए शोषित नारी को भी वह कैसे गुलाम है जा बार–बार उसके मस्तिष्क पर थोप देता हैं । शारीरिक, मानसिक शोषण करने वाले पति को छोड़कर मीरा बहन शुभा के पास चली आती है। किंतु मीरा का पति अपनी दैनंदिनी, काम भावना और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मीरा को घर वापस ले जाना चाहता है। मीरा को समझाते हुए कहता है, ''मीरा तू तो भारतीय नारी है, तुझे इस प्रकार घर छोड़ना शोभा नहीं देता। पति परमेश्वर समान होता है। धैर्य और सहनशीलता ही नारी का प्रमुख धर्म है। तू अपनी मर्यादा मत खोना। मैं तेरा पति हूं तेरे लिए परमेश्वर समान हूं मैंने तुझे घर दिया है। एक नाम दिया है। बच्चे दिये है। अगर मैंने तुझे कभी कुछ कह भी दिया तो क्या हो गया? क्या तूने देखा नहीं कि हमारे घर में औरतें ऐसी ही पीटती आई है। आखिर औरत औरत है। मर्द की गुलामी नहीं करेगी तो क्या सिर पर चढ़ेगी? पति को हर तरह खुश रखना ही पत्नी का धर्म है।''[3] मीरा के पति के माध्यम से भारतीय नारी संबंधी भारतीय सामाजिक मान्यताएं किस तरह नारी विरोधी है, इसका सजीव चित्रण उपरोक्त वाक्य में दिखाई देता है। बहला–फुसलाकर मीरा का पति मीरा को वापस घर ले आता है। किंतु कुछ ही दिनों के बाद मीरा को जान से मार देता है। जान से मारने के बाद भी मीरा के परिवार वाले और समाज मीरा के पति को मीरा के बच्चे और सामजिक प्रतिष्ठा के लिए कोई सजा नहीं देना चाहता है। क्योंकि मीरा के पति को सजा मिलेगी तो मीरा के नैतिकता पर सवाल उठेगें।मनिका जी पुरुष प्रधान सामाजिक मान्यता के बारे में इसी कहानी में लिखते हुए कहती है कि, ''उसके पति को सजा क्यों नहीं दिलाई गई? रह रहे कर उसके अंतर्मन को यह बात को चोट रही थी कि हमारा सामाजिक ढांचा ही इस प्रकार का है, जहां पुरुष के लिए किसी सजा का प्रावधान नहीं है।''[4]

भारतीय समाज में चुपचाप अन्याय–अत्याचार सहन करने वाली नारी को प्रतिष्ठित और नैतिक तथा उच्च संस्कारों वाली समझा जाता है। अर्थात अन्याय अत्याचार सहने के लिए नैतिकता और प्रतिष्ठा का लेबल भी नारी के ऊपर पुरुष व्यवस्था ने चालाकी से लगाया है। माँ– बाप की प्रतिष्ठा, मान–सन्मान, आबरू बचाने के लिए अन्याय और अत्याचारी वैवाहिक जीवन जीने के लिए भारतीय महिला मजबूर दिखाई देती है। अन्यायी सामाजिक मान्यता का पालन करना है सामान्य महिला का कर्तव्य बन जाता है। नैतिकता, कुलीनता, शालीनता, प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि के बहाने सामाजिक व्यवस्था द्वारा स्त्री का शोषण आज भी परिवार और परिवार के बाहर होता हुआ दिखाई देता है। 'बीमार' कहानी में मनिकाजी पति द्वारा किए जाने वाले शारीरिक, मानसिक शोषण का यथार्थ चित्रण करती है। कहानी की नायिका रीमा पति से माँ की प्रतिष्ठा और नैतिकता के डर से शारीरिक और मानसिक अत्याचार मजबूरी में सहन करती है। मां की खुशी और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए शशांक के हवस का शिकार रीमा को हर रोज होना पड़ता है। शशांक बड़ी बेरहमी से रीमा का हर रोज बलात्कार करता है। पति द्वारा हर रोज किए जाने वाले इस बलात्कार को भी रीमा सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए चुपचाप सहन करती हुई दिखाई देती है। पति के अनचाहे बलात्कार से परेशान रीमा अंत में अपनी मां से कहती है कि, ''विवाह कितनी गलत और गैर जरूरी संस्था है, मम्मी दो जून की रोटी और एक रात का सेक्स का जुगाड़ बैठाने के लिए इतना बड़ा झंझट।''[5]

पुरुष वर्चस्ववादी विवाह संस्था के कारण विकसित परिवार व्यवस्था में नारी को समान अधिकार नहीं दिए गए तो विवाह संस्था और परिवार भी बिखर जाएंगे। पति परमेश्वर के हाथों आज भी हजारों महिलाएं शारीरिक, भावनिक अत्याचार सामाजिक नैतिकता के डर से चुपचाप सहती हुई दिखाई देती है। नैतिकता के

मानदंड पुरुष और महिला के लिए एक समान होने चाहिए। एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान नैतिकता नारी जीवन के लिए सबसे बड़ा पीड़ा का कारण है। नैतिकता के कटघरे में कैद नारी को अपना जीवन अपनी कामभावना अथवा सेक्स को दबाकर जीना अन्यायी है। इसलिए एकांगी और पुरुष व्यवस्था के अनुरूप विद्यमान नैतिक व्यवस्था को स्त्री– पुरुष के अनुरूप समान, समन्यायिक बनाना जरूरी हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नैतिकता के नए सवाल– स्त्रीत्व की नैतिकता– मैत्रेयीपुष्पा पृष्ठ 138 –139.
2. स्त्री मुक्ति साझा चूल्हा– अनामिका पृष्ठ –12.
3. अन्वेषी – मनिका मोहिनी – कोई सजा नहीं पृष्ठ– 74 .
4. अन्वेषि – मनिका मोहिनी– कोई सजा नहीं – पृष्ठ 77.
5. अन्वेषी मनिका मोहिनी– बीमार पुष्ट 118.

❖◆❖